e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 6, June 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.423

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306223|

भारतीय राजनीति और धर्म

Dr. Rupesh Kumar Gurjar

M. Phil., NET-JRF, Department of Political Science, Shahpura, Jaipur, Rajasthan, India

सार: भारत का धर्म ईसाईयत या इस्लाम की तरह पंथ नहीं है। यह प्रकृति और मनुष्यता की आदर्श आचार संहिता है। यहां आदिकाल से धर्म और राजनीति सहगामी रहे हैं। समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया ने धर्म और राजनीति को एक ही बताया था। कहा था 'राजनीति अल्पकालिक धर्म है और धर्म दीर्घकालिक राजनीति। धर्म का काम है शुभ की स्थापना और अच्छाइयों की ओर प्रेरित करना।

I. परिचय

धर्म और राजनीति का सहअस्तित्व लोकमंगलदाता है। श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर सैकड़ों वर्ष से राष्ट्रीय अभिलाषा है। अनेक प्रयास हुए। अनेक जीवन गए। व्यापक संघर्ष हुआ, लेकिन तत्कालीन राजनीति धर्म के साथ नहीं खड़ी हुई। अब राजनीति और धर्म के कर्तव्यपालन से करोड़ों लोगों का स्वप्न पूरा हुआ है। स्वतंत्र भारत में धर्म और राजनीति के बीच शत्रुता का भाव था। यहां धर्म और आधुनिक राजनीति के रिश्ते यूरोपीय माडल से संचालित होते रहे थे। यूरोप में राजव्यवस्था और चर्च के मध्य अधिकारों को लेकर लंबा संघर्ष चला। संघर्ष टालने के लिए चर्च और राजा के कार्यों में विभाजन हुआ। सांसारिक कार्य राजनीति और राजव्यवस्था के हिस्से आए और पंथिक कार्य चर्च को मिले। यही माडल भारत आया। यहां पंथ का अर्थ धर्म हो गया। राजनीति और धर्म अलग हो गए। राजनीति निंदित क्षेत्र हो गया और धर्म सांप्रदायिक।[1,2,3] सामान्य घटनाओं पर भी लोग टिप्पणी करते हैं कि इस काम में राजनीति नहीं होनी चाहिए। संप्रति राजनीतिक-संवैधानिक संस्थाओं और धर्म के मध्य अच्छे संबंध नहीं हैं। जबकि कायदे से प्रत्येक चुनौतीपूर्ण काम में आदर्श राजनीति होनी चाहिए।

भारत का धर्म ईसाईयत या इस्लाम की तरह पंथ नहीं है। यह प्रकृति और मनुष्यता की आदर्श आचार संहिता है। यहां आदिकाल से धर्म और राजनीति सहगामी रहे हैं। समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया ने धर्म और राजनीति को एक ही बताया था। कहा था, 'राजनीति अल्पकालिक धर्म है और धर्म दीर्घकालिक राजनीति। धर्म का काम है शुभ की स्थापना और अच्छाइयों की ओर प्रेरित करना। राजनीति का काम है बुराइयों से लड़ना। धर्म अच्छाई न करे और स्तुति करता रहे तो वह निष्प्राण हो जाता है और राजनीति जब बुराइयों से नहीं लड़ती, केवल निंदा करती है, तो वह झगड़ालू हो जाती है।' लोहिया ने धर्म और राजनीति के मूल तत्वों के सम्मिलन पर जोर दिया कि दोनों एक दूसरे से संपर्क न तोड़ें। हालांकि सेक्युलर धारणा के यूरोपीय माडल में राजनीति में धर्म प्रेरणा की कोई गुंजाइश नहीं। इस्लाम और ईसाईयत पंथ या रिलीजन हैं। पंथ मजहब धर्म नहीं हैं, लेकिन इन्हें भी धर्म कहा जाता है। धर्म एक है, लेकिन सर्व धर्म समभाव की चर्चा होती है। पंथनिरपेक्षता को धर्मनिरपेक्षता कहा जाता है। सभी धर्मों को समान बताया जाता है। जबकि बृहदारण्यक उपनिषद में धर्म की परिभाषा है कि धर्म प्रकृति के सभी भूतों का मधुसार है और समस्त भूत धर्म के मधुसार हैं।

धर्म में ब्रह्मांड की सभी गतिविधियां सम्मिलित हैं। सभी जीवों के प्रति आदर्श व्यवहार धर्म संहिता का ही भाग है। मनुष्य आदिम काल से ही आनंद अभिलाषी है। वह सुंदर, सुरक्षित, सुखी और संपन्न भूक्षेत्र में रहना चाहता है। ऋग्वेद में स्तुति है कि 'जहां आनंद, मुद, मोद एवं प्रमोद हैं। जहां कामनाएं तृप्त होती हैं, हमें वहां स्थान दें।' ऐसे सुखों के लिए आदर्श राजव्यवस्था एवं राजनीति चाहिए। प्रार्थना है, 'जहां विवस्वान का पुत्र राजा है, सदानीरा नदियां हैं, आनंद का द्वार है। हमें वहां स्थान दें।' राजव्यवस्था विहीन भूक्षेत्रों में अराजकता होती है। वाल्मीकि और व्यास ने राजव्यवस्था विहीन क्षेत्रों की दुर्दशा का वर्णन किया है। यह हाब्स के सामाजिक संविदा सिद्धांत से मिलता-जुलता है। भारत में धर्म प्रेरित राजधर्म और राजनीति का विकास ईसा के लगभग 5000 वर्ष पहले ही शुरू हो गया था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र की राजनीति राष्ट्रधर्म प्रेरित है। इसकी तुलना मैकियावली की 'प्रिंस' से होती है।

भारत में धर्म और राजनीति के मध्य आत्मीय संबंध रहे हैं। गांधीजी की राजनीति धर्म प्रेरित थी। उन्होंने 'धर्म को एक' बताया था। लोकमान्य तिलक की राजनीति का अधिष्ठान धर्म था। पुरुषोत्तम दास टंडन धर्म प्रेरित थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रपति होते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री की आपत्ति के बावजूद सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन में सम्मिलित हुए थे। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भी धर्म से प्रेरित थे और बिपिन चंद्र पाल भी। पंडित मदन मोहन मालवीय की राजनीति धर्म प्रेरित थी। राजनीति धर्म निर्देशित नहीं, अपितु धर्म प्रेरित थी। वैदिक काल में राजा की शपथ धार्मिक विद्वानों द्वारा कराई जाती थी। ऋग्वेद में शपथ का उल्लेख है, 'आपको अधिपति

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306223|

नियुक्त किया गया है। प्रजा आपकी अभिलाषा करे। आपके माध्यम से राष्ट्र का यश कम न हो।' शपथ में राजकर्तव्य भी बताए गए हैं कि 'हम सब कृषि, लोकमंगल, समृद्धि और सबके पोषण के लिए आपको स्वीकार करते हैं।' राजा शपथ लेने के बाद प्रतिज्ञा करता था कि 'मैं इस प्रतिज्ञा को तोड़ता हूं तो जीवन की सभी उपलब्धियां नष्ट हो जाएं।' यहां धर्म और राजनीति साथ-साथ हैं।[4,5,6]

स्वतंत्र भारत की राजनीति में पंथ-मजहब भी धर्म हो गए और राज्य धर्मनिरपेक्ष। शाहजहां धर्म-दर्शन से प्रभावित था। शाहजहां ने अपने पुत्र औरंगजेब को दर्शन पढ़ाने के लिए अध्यापक मुल्ला साहब की नियुक्ति की थी। औरंगजेब कट्टरपंथी मजहबी था। उसने अपने अध्यापक को पत्र लिखा, 'तुमने वस्तुओं को लेकर अव्यक्त प्रसंग समझाए, जिनसे मन को कोई संतोष नहीं होता। इनका मानव समाज के लिए कोई उपयोग नहीं। तुमने यह नहीं सिखाया कि किसी शहर को कैसे घेरा जाता है या सेना कैसे व्यवस्थित होती है?' डॉ. राधाकृष्णन ने 'ए ट्रेजरी आफ वर्ड्स ग्रेट लेटर्स' में संकलित इस पत्र का उल्लेख 1942 में 'धर्म की आवश्यकता' व्याख्यान में किया। डॉ. राधाकृष्णन धर्म दर्शन प्रेरित राजनेता थे। उनके व्यक्तित्व में राजनीति-धर्म का मिलन है। उन्होंने पंथनिरपेक्षता को अपने युग की मुख्य दुर्बलता बताया।

प्राचीन भारत में राजनीति शास्त्र के कई नाम प्रचलित थे। इसे दंडनीति, अर्थशास्त्र, राजधर्म, राजशास्त्र कहा जाता था। नीति शास्त्र सर्वाधिक प्रचलित था। नीति का अर्थ मार्गदर्शन होता है। वैदिक काल में सभा समितियों के संचालन के नियम धर्म प्रेरित थे। शुक्रनीति के अनुसार 'धर्म रक्षा' भी राजा का कर्तव्य था। जनक जैसे तमाम राजा धार्मिक गोष्ठियां कराते थे। धर्मविहीन राजनीति ने मजहबी तुष्टीकरण को सेक्युलरवाद कहा और सेक्युलर धर्म हो गया। स्वाधीनता आंदोलन की प्रेरणा धर्म तत्व था। धर्म और राजनीति अपनी-अपनी मर्यादा में मिलकर काम करें। धर्मविहीन राजनीति लोकमंगल का उपकरण नहीं बन सकती।

II. विचार-विमर्श

भारत में धर्म, सांप्रदायिकता और राजनीति एक दूसरे से बहुत गहराई से जुड़े हुए हैं। जबकि भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देता है , धार्मिक विविधता अक्सर राजनीतिक लामबंदी का एक साधन बन जाती है। सांप्रदायिकता , राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक पहचान का शोषण , तनाव और यहां तक कि हिंसा को भी बढ़ावा देता है ।
राजनीति में धर्म पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य और समानता का आह्वान

- वैश्विक विविधता: धार्मिक विविधता विश्व स्तर पर व्यापक है, जिसके कारण व्यवहार और राजनीतिक अभिव्यक्ति में भिन्नताएं होती हैं।
- अल्पसंख्यकों की भेद्यता: मानवाधिकार समूह सांप्रदायिक दंगों में अल्पसंख्यकों की भेद्यता को उजागर करते हैं तथा सरकार से सुरक्षा की मांग करते हैं।
- समान व्यवहार: यदि सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार किया जाए तथा भेदभाव को रोका जाए तो धर्म-आधारित राजनीति स्वीकार्य है ।
- सांप्रदायिक राजनीति और चुनावों में धार्मिक वर्चस्व के जोखिम की जांच
- धार्मिक श्रेष्ठता: सांप्रदायिक राजनीति अनन्य धार्मिक राष्ट्रवाद से उभरती है। यह धार्मिक श्रेष्ठता का दावा करके विभाजन पैदा करती है।
- बहुसंख्यक प्रभुत्व: समान हितों की दोषपूर्ण धारणा बहुसंख्यक प्रभुत्व या अल्पसंख्यक अलगाववाद को बढ़ावा देती है।
- सांप्रदायिक हिंसा: राजनीतिक लामबंदी पवित्र प्रतीकों और भावनाओं का शोषण करती है, जिसके परिणामस्वरूप सांप्रदायिक हिंसा होती है।
    - उदाहरण: विभाजन के दौरान पाकिस्तान को भयंकर सांप्रदायिक दंगे झेलने पड़े।
- धर्म-आधारित राजनीति: सांप्रदायिकता धर्म-आधारित राजनीति के खतरे को रेखांकित करती है , जिससे संघर्ष और अशांति का खतरा रहता है।
- सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष में भारत का धर्मनिरपेक्ष राज्य
- धर्मनिरपेक्ष राज्य: संविधान एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना करता है जिसका कोई आधिकारिक धर्म नहीं है।
    - यह भेदभाव पर रोक लगाते हुए धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है।
- भेदभाव विरोधी: राज्य का हस्तक्षेप धर्मों के भीतर समानता सुनिश्चित करता है तथा अस्पृश्यता जैसी प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाता है।
- पूर्वाग्रह के विरुद्ध: सांप्रदायिकता का मुकाबला करना महत्वपूर्ण है, इसके लिए पूर्वाग्रह, दुष्प्रचार और धर्म-आधारित राजनीतिक लामबंदी के विरुद्ध प्रयास करने की आवश्यकता है।
- भारतीय राजनीति [7,8,9]में जाति संघर्ष और परिवर्तन
- जातिगत असमानताएँ: भारत का जातिगत विभाजन विशिष्ट है, जिसमें वंशानुगत व्यवसाय अनुष्ठानों से जुड़े हुए हैं।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)
Impact Factor 8.423
|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|
|Volume 13, Issue 6, June 2024|
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306223|

- जाति व्यवस्था ने 'जाति बहिष्कृत' समूहों को बाहर कर दिया , जिससे अस्पृश्यता लागू हुई।
- जातिगत असमानताओं को समाप्त करने के प्रयास: ज्योतिबा फुले, गांधीजी, बी.आर. अंबेडकर और पेरियार रामास्वामी नायकर जैसे नेताओं का लक्ष्य जातिगत असमानताओं को समाप्त करना था।
- पारंपरिक जाति पदानुक्रम: आधुनिकीकरण, शहरीकरण, शिक्षा और आर्थिक परिवर्तनों ने पारंपरिक जाति पदानुक्रम को कमजोर कर दिया है।
- प्रगति के बावजूद, जाति का प्रभाव अभी भी बना हुआ है, जो विवाह, शिक्षा और आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर रहा है।
- गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत, 1999-2000

- भारतीय राजनीति में जाति: प्रतिनिधित्व, वोट और बदलते रुझान को समझना
- सामाजिक समुदाय के आधार के रूप में जाति: सांप्रदायिकता के समान , जातिवाद भी इस बात पर जोर देता है कि जाति सामाजिक समुदाय का मूल है , जो एक ही जाति के व्यक्तियों को अन्य जातियों से अलग, कथित साझा हितों के साथ एकजुट करती है।
- हालाँकि, यह विश्वास वास्तविकता से मेल नहीं खाता क्योंकि जाति सामाजिक अनुभव का केवल एक पहलू है, एकमात्र या प्राथमिक नहीं।
- राजनीति में जाति के रूप: राजनीति में जाति कई तरह से प्रकट होती है-

- चुनावी समर्थन हासिल करने के लिए पार्टियाँ जातिगत जनसांख्यिकी को ध्यान में रखते हुए उम्मीदवारों का चयन करती हैं।
- सरकार का लक्ष्य जाति और जनजाति का प्रतिनिधित्व करना है।
- कुछ पार्टियाँ विशिष्ट जातियों के साथ गठबंधन करती हैं, जिन्हें उनका प्रतिनिधि माना जाता है।
- चुनावों पर प्रभाव: जाति की भूमिका के बावजूद, चुनाव केवल जाति से प्रेरित नहीं होते।

- अनेक समुदाय: निर्वाचन क्षेत्रों में एक भी जाति का बहुमत नहीं होता, जिससे अनेक समुदायों को आकर्षित करना आवश्यक हो जाता है।
- बहु-जातीय निर्वाचन क्षेत्र: कोई भी पार्टी पूरी जाति से वोट हासिल नहीं कर पाती; " वोट बैंक " शब्द का तात्पर्य महत्वपूर्ण समर्थन से है, सर्वसम्मत समर्थन से नहीं।
- उम्मीदवारों की विविध पसंद: एक जाति से कई उम्मीदवार खड़े हो सकते हैं, और अलग-अलग हितों के कारण मतदाताओं की पसंद भी भिन्न हो सकती है।
- गतिशील राजनीतिक बदलाव: सत्तारूढ़ दल और वर्तमान सरकारें अक्सर हार जाती हैं, जो गतिशील राजनीतिक बदलाव को दर्शाता है।
- बहुआयामी प्रभाव: जाति के अलावा राजनीति में विभिन्न कारक मायने रखते हैं।

- मजबूत पार्टी संबद्धता अक्सर जातिगत निष्ठा से अधिक महत्वपूर्ण होती है।
- जातियों के भीतर आर्थिक असमानताएं विविध मतदाता हितों को आकार देती हैं।
- लिंग, धन और सरकार के प्रदर्शन का मूल्यांकन मतदान विकल्पों को प्रभावित करते हैं।
- जाति और राजनीति: गतिशील संबंध और भारत में सशक्तिकरण पर इसका प्रभाव
- जाति और राजनीति [10,11,12]का संबंध: जाति का राजनीति के साथ संबंध एकतरफा नहीं है।
- राजनीति केवल जाति के प्रभाव के आगे झुकती नहीं है, बल्कि वह जाति को राजनीतिक क्षेत्र में ले आती है और उसका राजनीतिकरण कर देती है।
- जातिगत गतिशीलता में परिवर्तन:
- जाति समूह पहले से बहिष्कृत पड़ोसी जातियों या उप-जातियों को सम्मिलित करके अपना विस्तार करते हैं।
- गठबंधन के लिए विभिन्न जाति समूहों के बीच संवाद और बातचीत आवश्यक है।
- राजनीति में 'पिछड़ा' और 'अगड़ा' जैसी नई जाति श्रेणियों का उदय ।
- जाति की बहुमुखी भूमिका: जाति-आधारित राजनीति दलितों और ओबीसी जैसे हाशिए के समुदायों को सत्ता और सम्मान में अपनी हिस्सेदारी मांगने के लिए एक मंच प्रदान करती है।
- भेदभाव के विरुद्ध: भेदभाव के विरुद्ध वकालत, संसाधनों, भूमि और अवसरों तक बेहतर पहुंच की मांग में तेजी आई है।
- प्राथमिकताओं का लोकतंत्रीकरण: जबकि राजनीति में जाति की भागीदारी ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर पड़े समूहों को सशक्त बनाती है , जाति गतिशीलता पर विशेष ध्यान व्यापक लोकतांत्रिक प्राथमिकताओं को कमजोर कर सकता है और संभावित रूप से सामाजिक कलह को जन्म दे सकता है ।

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|
|Volume 13, Issue 6, June 2024|
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306223|

- भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, फिर भी यह अनेक कारकों के साथ मौजूद है।
- मतदाताओं की विविध संबद्धताएं और जटिल विचार राजनीतिक गतिशीलता की सूक्ष्म प्रकृति को रेखांकित करते हैं, तथा ऐसे किसी भी सरलीकरण को चुनौती देते हैं जो चुनावों को केवल जाति पर केन्द्रित कर देता है।

III. परिणाम

भारत में कई धर्मों के लोग रहते हैं। राजनेताओं द्वारा दंगे करवाने और धर्म के आधार पर एक समूह के लोगों को दूसरे समूह के खिलाफ भड़काने के लिए धर्म का शोषण किया जाता है। हम सभी समान हैं। संविधान में लिखा है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, लेकिन राजनेताओं द्वारा वोट पाने के लिए धर्म का शोषण किया जाता है। अगर हम चाहते हैं कि हमारा देश राजनीतिक रूप से मजबूत हो तो धर्म का शोषण नहीं किया जाना चाहिए। धर्म व्यक्ति की अपनी निजी आस्था है और इसे खुद पर छोड़ देना चाहिए।

बेशक, हमारी राजनीतिक व्यवस्था धर्म से प्रभावित है। धर्म ने हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया है। चुनाव, रोजगार, अनुमोदन प्राप्त करना; इन सभी में धर्म एक प्रमुख भूमिका निभाता है। नेता देश की ज़रूरत के हिसाब से नहीं बल्कि धर्म के हिसाब से काम करते हैं। हर राजनीतिक नेता का सिर्फ़ एक धर्म होना चाहिए - भारतीय!

स्वतंत्रता संग्राम के बाद से ही भारतीय राजनीति ने समाज को धार्मिक आधार पर विभाजित कर दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने माना है कि राजनेताओं द्वारा धार्मिक अपील करना संविधान की भावना के अनुरूप नहीं है। यदि शिक्षा सभी धर्मों के बीच भाईचारे को बढ़ावा दे सकती है, तो लोग राजनीतिक बयानबाजी से मुक्त हो जाएंगे। एक जिम्मेदार मीडिया जो पक्षपात के बजाय धार्मिक सद्भाव को उजागर करता है, उसका स्वागत है।

भारतीय राजनीति जाति और धर्म पर चलती है। हर धर्म दूसरे धर्म पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है, चाहे वह राज्य स्तर पर हो या राष्ट्रीय स्तर पर, धर्म के आधार पर राजनीतिक दल हैं। बहुत से लोग धर्म के आधार पर और अपने धर्म से जुड़े व्यक्ति को वोट देते हैं। मेरे विचार से धर्म आधारित राजनीति हानिकारक है, यह नागरिकों को विभाजित [13,14,15]करती है।

भारतीय राजनीति पर धर्म का गहरा प्रभाव है। धार्मिक असहिष्णुता और कट्टरता हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। हम सभी को यह समझना चाहिए कि धर्म हमें ईमानदारी, दया और सभी के प्रति प्रेम सिखाता है। राजनेताओं को निष्पक्ष रहने और सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए।

ब्रिटिश राज से पहले, हालांकि शासकों ने विभिन्न धर्मों को बढ़ावा दिया, लेकिन उन्होंने राजनीति या प्रशासन को धर्म के साथ नहीं मिलाया। विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को समान राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त थी। 'फूट डालो और राज करो' की ब्रिटिश नीति ने भारतीय राजनीति पर धर्म के प्रभाव की शुरुआत की।

यह कहना नासमझी होगी कि भारतीय राजनीति धर्म या जाति से प्रभावित नहीं है। धार्मिक भावनाओं का इस्तेमाल वोट बैंक बनाने के लिए किया जाता है। भारतीय राजनीति के क्षेत्र में धर्म की भागीदारी के कारण छद्म धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा उभरी। इन सभी स्थितियों से एक सवाल उठता है - क्या भारत वास्तव में एक धर्मनिरपेक्ष देश है?

दुर्भाग्य से भारतीय राजनीति शुरू से ही धर्म से प्रभावित रही है। कई राजनीतिक दल लोगों के विशेष समूहों के विकास पर ध्यान केंद्रित करने का वादा करते हैं। हालाँकि, धर्म के प्रभाव ने अक्सर पूरे देश के आर्थिक कल्याण, महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे राष्ट्रीय मुद्दों को दरकिनार कर दिया है। भले ही भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्ष देश है, लेकिन धर्म पर आधारित वोट बैंक की नीतियों ने हिंसा, दंगे, हमले और भीड़ हत्या का कारण बना है। एक बेहतर भारत के लिए, राजनीति को धर्म से मुक्त किया जाना चाहिए।

मेरा मानना है कि यह एक प्रमुख भूमिका निभाता है। भगवान के नाम पर मानवीय भावनाओं का फ़ायदा उठाने वाले राजनेता वास्तव में पाप हैं और किसी भी तरह से यह किसी के लिए मददगार नहीं होने वाला है। असली राजनीति लोगों की समस्याओं का समाधान ढूँढना है न कि लोगों की धार्मिक भावनाओं का निजी फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करना।[16,17,18]

किसी भी राजनेता के लिए धर्म को खुद को स्थापित करने का सबसे अच्छा तरीका माना जाता है। उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि इससे समाज और देश के बीच तनाव पैदा होता है। 2018 में रहने वाले लोगों के रूप में, हम वास्तव में धार्मिक राजनीति में रुचि

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306223|

नहीं रखते हैं। इसलिए अब राजनेताओं के लिए यह समझने का समय आ गया है कि राजनीति का यह तरीका सफल नहीं होने वाला है।

भारत इन दो चीजों पर बहुत अधिक निर्भर है: धर्म और राजनीति। हालाँकि धर्म को राजनीति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए एक विशेष स्थान दिया गया था, लेकिन यह राजनीति को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। कुछ ऐसी परिस्थितियाँ रही हैं जहाँ धर्म को राजनीति के संबंध में एक महत्वपूर्ण समाधान देना चाहिए; हालाँकि, यह विरोधाभासी बयान देता है और राजनीतिक हिंसा और परस्पर विरोधी स्थितियों को भड़काता है। इसलिए धर्मनिरपेक्षता लाने के लिए धर्म और राजनीति को अलग करने के लिए कड़ी मेहनत करना आवश्यक है जो बहुलवादी समाज के लिए अधिक व्यवहार्य है।

IV. निष्कर्ष

भारत एक लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष देश है, फिर भी यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। सरकार हर नागरिक के साथ समानता और सम्मान के साथ व्यवहार करने के लिए विभिन्न पहल करती है। और राष्ट्र की बेहतरी के लिए सभी धर्मों के लोग मिलकर काम करते हैं। हालाँकि हिंदू बहुसंख्यक हैं, भारत सरकार ने विभिन्न धर्मों के लोगों की बेहतरी के लिए पहल की है और हमारे देश के प्रमुख पदों पर विभिन्न धर्मों के लोगों को नियुक्त किया है। यह बात जान लेनी चाहिए कि धर्म और राजनीति एक दूसरे से अलग नहीं हैं। अगर राजनेता धर्म से मार्गदर्शन लेते हैं तो यह अच्छी बात है लेकिन अगर कोई राजनेता किसी खास धर्म के प्रति पक्षपाती है तो देश का पतन निश्चित है। 21वीं सदी में भारतीयों की मानसिकता में बदलाव आया है। राजनेता अपने फैसलों में अधिक परिपक्व हैं और धर्म को राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करने देते। भारतीय राजनीति में धर्म की अहम भूमिका है। यह हमें ईमानदारी, सच्चाई, सहिष्णुता, दया और सभी के प्रति प्रेम सिखाता है। एक राजनेता लोगों का प्रतिनिधि होता है और वह सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए धर्म की भावना का उपयोग कर सकता है। लेकिन अगर कोई राजनेता किसी धर्म के पक्ष में पक्षपाती है तो वह कभी भी सभी के लिए अच्छा नहीं हो सकता। धर्म की भावना आंतरिक रहस्योद्घाटन देती है और राजनीति लोगों के अधिकारों की रक्षा करती है। राजनेताओं का कर्तव्य है कि वे निष्पक्ष रहें और सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखें। भारत की राजनीतिक व्यवस्था लोकतंत्र है - यह "लोगों की सरकार, लोगों के लिए, लोगों द्वारा" है। इसलिए मेरे अनुसार राजनीति में धर्म को जगह नहीं दी जानी चाहिए। इसे खत्म करना[19] बहुत ज़रूरी है। लोगों को सुरक्षित और स्वतंत्र महसूस कराना चाहिए और किसी भी धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए और उन्हें धर्म के अनुसार वोट करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। समस्या का समाधान यह है कि राजनीतिक दलों को एक विशेष धर्म का समर्थन करना बंद करना चाहिए और लोगों के लाभ के लिए काम करना चाहिए। बहुलतावादी समाज के लिए धर्म आधारित राजनीति की तुलना में धर्मनिरपेक्षता अधिक उपयुक्त होगी। फिर भी भारत में, धर्म राष्ट्रीय राजनीति का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। ऐसी स्थिति में धर्मों में उपलब्ध ज्ञान राजनीतिक ज्ञान में योगदान दे सकता है और समाज को धर्म से उत्पन्न या उससे जुड़े किसी भी राजनीतिक युद्ध को रोकने के लिए सतर्क रहना चाहिए। भारत में राजनीति और धर्म एक दूसरे का समर्थन करते रहे हैं। मुंबई में मराठों और दलितों के बीच हाल ही में हुआ दंगा दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में धर्मनिरपेक्ष लहर को बनाए रखने की आवश्यकता की ओर इशारा करता है। धर्म में अंध विश्वास को अक्सर एक ऐसी ताकत के रूप में देखा जाता है जो लोगों को कार्रवाई के लिए प्रेरित करती है। इस तरह की धर्म-मिश्रित राजनीति ने अन्य धर्मों के प्रति असहिष्णुता, सांप्रदायिक घृणा और नागरिक विद्रोह को जन्म दिया है। इतिहास खुद को दोहराता है। और मैं डरकर खुद से पूछता हूं, "क्या हम एक और विभाजन की ओर बढ़ रहे हैं?" मेरी राय में राजनीति पर धर्म का प्रभाव है। चुनाव के समय उम्मीदवार वोट पाने के लिए लोगों की धार्मिक भावनाओं पर हमला करते हैं। धर्म और राजनीति विनाश का एक नुस्खा है। मुझे लगता है कि यही कारण है कि भारत बहुत संसाधन संपन्न होने के बावजूद भी अभी भी पीड़ित है। भारत में लोगों पर धर्म की पकड़ के कारण लोग इसे श्रद्धा के साथ मानते हैं लेकिन राजनीतिक दल अपने लाभ के लिए धर्म को राजनीति के साथ मिला देते हैं। हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है, जिसमें विभिन्न संस्कृतियाँ और धर्म हैं। राजनीतिक दल इस स्थिति का फ़ायदा उठाते हुए किसी ख़ास धर्म का समर्थन करते हैं या उस धर्म के लोगों को विशेष सुविधाएँ और सुविधाएँ देते हैं। ऐसी मानसिकता लोगों के बीच शांति और एकता को नष्ट करती है।[19]

संदर्भ

1. जेलेन, टेड जी. (2002). तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में धर्म और राजनीति . कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 1.
2. ↑ फ़ुलर, ग्राहम ई., द फ़्यूचर ऑफ़ पॉलिटिकल इस्लाम , पैल्ग्रेव मैकमिलन, (2003), पृ. 21
3. ^ बोसवेल, जोनाथन (2013)। समुदाय और अर्थव्यवस्था: सार्वजनिक सहयोग का सिद्धांत। रूटलेज। पी. 160. आईएसबीएन 9781136159015.
4. ^ "ईश्वर के नाम पर घृणा" . दक्षिणी गरीबी कानून केंद्र । 2019-12-01 को लिया गया ।
5. ^ "धर्मतंत्र | राजनीतिक व्यवस्था" । एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका । 2019-12-01 को लिया गया ।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.423

| www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306223|

6. ^ "ईरान के अंदर - ईरान में सत्ता की संरचना | आतंक और तेहरान | फ्रंटलाइन | पीबीएस" . www.pbs.org । पुनः प्राप्त किया 2019-12-01 .
7. ^ "वेटिकन सिटी का निर्माण" । नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी । 2013-12-16 । 2019-12-01 को लिया गया ।
8. ^ संवाददाता, हेरिएट शेरवुड धर्म (2017-10-03)। "20% से अधिक देशों में आधिकारिक राज्य धर्म हैं - सर्वेक्षण" । द गार्जियन । आईएसएसएन 0261-3077 । 2019-12-01 को लिया गया ।
9. ^ "धर्म" . www.bhutan.com . 2019-12-01 को लिया गया .
10. ^ विंकलर, एलिजाबेथ (2016-01-07)। "क्या फ्रांस के लिए लैसिटे को त्यागने का समय आ गया है?" . द न्यू रिपब्लिक . आईएसएसएन 0028-6583 . 2019-12-01 को लिया गया .
11. ^ [एबी सी डी] यहाँ जाएं: अन्ना ग्रिज़माला-बुसे, "तुलनात्मक राजनीति को धर्म को (अधिक) गंभीरता से क्यों लेना चाहिए," राजनीति विज्ञान की वार्षिक समीक्षा 15, संख्या 1 (15 जून, 2012): 421-42, https://doi.org/10.1146/annurev-polisci-033110-130442
12. ^ केनेथ डी. वाल्ड और क्लाइड विलकॉक्स, "धर्म को समझना: क्या राजनीति विज्ञान ने आस्था कारक को फिर से खोजा है?", अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू 100, नंबर 04 (नवंबर 2006): 523, https://doi.org/10.1017/s0003055406062381 .
13. ↑ पॉसनर, डैनियल एन. अफ्रीका में संस्थाएँ और जातीय राजनीति। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005।
14. ↑ चंद्रा के, सं. 2012. जातीय राजनीति के रचनात्मक सिद्धांत। अप्रकाशित पांडुलिपि, राजनीति विज्ञान विभाग, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय।
15. ↑ स्टार्क आर, फिंके आर. 2000. एक्ट्स ऑफ फेथ: एक्सप्लेनिंग द ह्यूमन साइड ऑफ रिलिजन. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.
16. ^ टोरबेन इवरसन और फ्रांसेस रोसेनब्लूथ, "लिंग की राजनीतिक अर्थव्यवस्था: श्रम के लिंग विभाजन और लिंग मतदान अंतर में क्रॉस-नेशनल भिन्नता की व्याख्या," अमेरिकन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस 50, नंबर 1 (2006): 1-19, https://www.jstor.org/stable/3694253 .
17. ^ ट्रेजो 2009. "लैटिन अमेरिका में धार्मिक प्रतिस्पर्धा और जातीय लामबंदी: कैथोलिक चर्च मेक्सिको में स्वदेशी आंदोलनों को क्यों बढ़ावा देता है।"
18. ^ गाइ ग्रॉसमैन, "नवीकरणीय ईसाई धर्म और एलजीबीटी की राजनीतिक प्रमुखता: उप-सहारा अफ्रीका से सिद्धांत और साक्ष्य," द जर्नल ऑफ़ पॉलिटिक्स 77, नंबर 2 (अप्रैल 2015): 337-51, https://doi.org/10.1086/679596 .
19. ^ [एबी] यहाँ जाएं: "क्या धर्म को राजनीति में भूमिका निभानी चाहिए?" . न्यू इंटरनेशनलिस्ट . 2019-01-29 . 2019-12-01 को लिया गया

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details